वफाते सरवरे दो आलम (स०)

अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला
अनुवादक : सै0 सुफयान अहमद

10 हि0 में हुज्जतुलविदाअ के मौक़े पर इस्लाम के अहकाम की तालीम के साथ हुज़ूर ने यह भी फरमाया कि मुझे आइन्दा साल तुम लोगो से मिलने की उम्मीद नहीं है। और कुछ रिवायतों में यह अलफाज़ हैं। आँ–हज़रत (स0) ने फरमायाः ''शायद मैं इसके बाद हज न कर सकूँ।'' इस वक़्त आपने तमाम मुसलमानों को अपने दीदार की इज़्ज़त बख़्शी और सबको हसरत के साथ रवाना किया। आपने शोहदा–ए–ओहद रज़ि0 की क़ब्रों पर जाकर उनको आठ साल के बाद इस तरह रुख़सत किया जैसे कोई मरने वाला ज़िन्दा अज़ीज़ों को रुख़सत करता है फिर मुसलमानों की एक बड़ी तादाद में एक खुतबा इरशाद फरमाया और कहाः ''मुझे डर नहीं है कि तुम लोग मेरे बाद शिर्क करोगे लेकिन इससे डरता हूँ कि कहीं दुनिया में न फंस जाओ और दुनिया के हासिल करने के लिए कहीं आपस में फसाद और खूनख़राबा न करो क्योंकि अगर तुम ऐसा करोगे तो उसी तरह हलाक और बर्बाद हो जाओगे जिस तरह तुमसे पहली क़ौमें हलाक हुईं। वक़्त गुज़र गया और आख़िर 18 या 19 तारीख़ सफर का महीना 11 हिजरी को आधी रात के वक़्त आप जन्नतुलबक़ी के क़ब्रिस्तान में तशरीफ ले गए और जब वहाँ से वापस हुए तो तबियत ख़राब हो गई। फिर मरज़ में शिद्दत होने लगी। एक रोज़ कुछ सुकून था ज़ोहर की नमाज़ के बाद ख़ुत्बा दिया। यह आपकी हयात का आख़री ख़ुत्बा था आपने इरशाद किया ख़ुदा ने अपने एक बन्दे को इख़्तियार दिया है कि चाहे वह दुनिया की नेमतों को क़ुबूल कर ले या जो कुछ आख़िरत में है उसे क़ुबूल कर ले मगर उस बन्दे ने ख़ुदा ही के पास की चीज़ें क़ुबूल कर लीं हैं। आपको अपनी बेटी फातिमा ज़हरा (स0) से बेहद मुहब्बत थी बीमारी के ज़माने में किसी वक़्त उन्हें बुलाया, जब हाज़िर हुईं तो उनके कान में कुछ कहा तो वह रोने लगीं, फिर कुछ फरमाया तो वह हंसने लगीं। जब किसी ने पूछा तो रसूल (स0) की बेटी ने फरमायाः पहली बार मेरे बाबा ने फरमाया कि मैं इसी मरज़ में इन्तेक़ाल करूँगा तो मैं रोने लगी फिर फरमाया कि मेरे बाद मेरे ख़ानदान में सबसे पहले तुम मुझ से आकर मिलोगी तो मैं ख़ुश होकर हंसने लगी।

वफात के रोज़ जिस क़दर दिन चढ़ता जाता था आप पर बेहोशी ज़्यादा हो रही थी और फिर किसी वक़्त हालत बेहतर भी हो जाती थी। हज़रत फातिमा ज़हरा (स0) से फरमाया हसन (अ0) और हुसैन (अ0) को मेरे पास लाओ। बच्चे लाए गए, हज़रत इमाम हसन (अ0) ने अपना मुँह नाना के मुँह पर रख दिया और हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने अपना सर रसलुल्लाह (स0) के सीने पर रखा और रोने लगे। आपने अपने नवासों पर मुहब्बत और मेहरबानी का इज़हार फरमाया और उनके बारे में सबको वसीयत फरमायी।

जनाबे फातिमा ज़हरा (स0) ने हज़रत रिसालतमआब (स0) की तकलीफ देखकर कहाः हाए मेरे बाबा की बेचैनी! आपने इरशाद किया

(बक़िया.....................पेज 5 पर)

और उसकी पैरवी के लिए हर तरह से हज़रत इमाम हसन (अ0) के ख़ानदान के लोगों और उनके साथियों पर दबाव डाला। अपनी इमामत के दस सालों के दौरान आपने अपनी ज़िन्दगी सख़्त परेशानियों और तकलीफ़ों के बीच गुज़ारी जिसमें उनके घर पर भी कोई हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम नहीं था। तारीख़ लिखने वालों के मुताबिक़ 50 हि0 में मुआविया की तहरीक पर आपकी एक बीवी के ज़रिए ज़हर देकर आपको शहीद कर दिया गया। (इरशाद पेज–174)

कामिल इन्सान की हैसियत से हज़रत इमाम हसन (अ0) अपने बुजुर्ग बाप और अपने नाना का मुकम्मल नमूना थे। हक़ीक़त में जब तक पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ज़िन्दा रहे, आप और आपके भाई हमेशा रसूल (स0) की सोहबत में रहे। आप (स0) उन दोनों को कभी–कभी अपने काँधों पर बिठाते थे। सुन्नी और शीआ दोनों उलमा ने हज़रत इमामे हसन (अ0) और हज़रत इमामे हुसैन (अ0) के बारे में पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की इस हदीस को नक़ल किया है :

''मेरे यह दोनो बेटे इमाम हैं चाहे वह क़याम करें या बैठ जाएँ।'' (यानी चाहे वह ज़ाहरी ख़िलाफत पर बैठें या न बैठें)

इस हक़ीक़त के बारे में पैग़म्बरे इस्लाम (स0) और हज़रत अली अलैहिस्सलाम की बेशुमार रिवायतें हैं कि अपने बुजुर्ग बाप के बाद हज़रत इमाम हसन (अ0) इमामत की कुर्सी पर जलवाअफरोज़ होंगे। □□□

(बक़िया..........................वफ़ाते सरवरे दो आलम स0)

बेटी! तुमहारा बाप आज के बाद फिर बेचैन न होगा। अब वफात का वक़्त क़रीब आ रहा था इतने में लबे मुबारक हिले तो लोगों ने आपको फरमाते हुए सुनाः ''अस्सलातु वमा मलकत अइमानुकुम'' मतलब यह था कि नमाज़ की हमेशा पाबन्दी करना और ग़ुलामों और कनीज़ों के हक़ का ख़याल रखना। चादर कभी अपने मुबारक चेहरे पर डालते थे और कभी हटा देते थे। फिर उंगली से इशारा किया और फरमायाः ''बलिररफीकुल अअ्ला'' यानी अब सिर्फ वह बड़ा और अज़ीम रफीक़ दरकार है। यह कहते–कहते नज़ा की हालत शुरु हो गयी और मुबारक रूह आलमे कुद्स की तरफ रवाना हो गयी।

शोहरत इसी की है कि पीर के दिन आँ–हज़रत ने 63 साल की उम्र में वफात पायी और मंगल का दिन गुज़र कर बुध की रात में दफन हुए।

हज़रत अली (अ0) ने बनी हाशिम में से हज़रत अब्बास रज़ि0 और उनके दोनो बेटों के साथ मिलकर ग़ुस्ल दिया और उसामा बिन ज़ैद बिन हारसा और शुक़रान, 'हुज़ूर (स0) के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम' भी ग़ुस्ल देने के काम में शरीक थे इन ही लोगों की मदद से हज़रत अली (अ0) ने तदफीन के फराएज़ अन्जाम दिए।

अल्लाह उस पाक रूह के सदक़े में मुसलमानों पर रहम फरमाए जिसने तमाम दुनिया को अपने नूरे हिदायत से रौशन और मुनव्वर कर दिया। और तमाम मुसलमानों को इसकी तौफीक़ दे कि वह हुज़ूर नबी करीम (स0) की पाक सीरत पर अमल करके ख़ुदा की मदद और आपकी पाक रूह की रज़ामन्दी से दुनिया और आख़िरत की कामयाबी और नजात हासिल करें। आमीन!

□□□